Harvard University
Urdu 102: Intermediate Urdu-Hindi

शोले

Part 7

रामगढ़ के स्टेशन पर जय और वीरू रेलगाड़ी से उतरते हैं। स्टेशन के बाहर एक तांगेवाली लड़की खड़ी है। वह दोनों को बुलाती है।

बसंती - हाँ बाबू जी, कहाँ जाओगे? बेलापुर, नामपुर(?), फ़तहगढ़, रामगढ़। कहाँ जाना है, बोलो। अरे, क्या कभी तांगा नहीं देखा पहले? यह गाँव खेड़ा है साहब। यहाँ मोटर गाड़ी नहीं मिलेगी कि बैठे और गर्रररररर से चल दिये। यहाँ सिर्फ़ बसंती का तांगा ही चलता है। देखो। मुझे बेफ़ज़ूल बात करने की आदत तो है नहीं। चलना है तो बोलो चलना है ...

जय - अरे भाई हमको तो चलना है।

बसंती - नहीं चलना है तो ठीक है कोई बात नहीं। अब बसंती से कोई दुश्मनी तो नहीं हो जायेगी। तुम बाहर निकले तो मैंने सोचा कि तांगा करोगे तो पूछ लिया। अब कोई ज़बरदस्ती का सौदा तो है नहीं। बैठें बैठें, नहीं बैठें नहीं बैठें। अरे यह तो बसंती का तांगा है। किसी ज़मीनदार की बेगारी थोड़ी है कि मर्ज़ी न मर्ज़ी चढ़ना ही पड़े। तो आज तो वही मिसाल हो गयी है कि...

वीरू - हाँ चलिये, चलना है चलना है। चलना है यार। (तीनों तांगे में चढ़ जाते हैं)

बसंती - हाँ हाँ, तो आ जाओ। मैंने कब मना किया। देखो, मुझे बेफ़ज़ूल की बात करने की आदत तो है नहीं। इसलिये पहले ही बोल देना अच्छा है। बेलापुर का दो रुपया और रामगढ़ का डेढ़ रुपया। इस में झिगझिग मत करना। बसंती जो बोल गयी तो बोल गयी। हाँ।

वीरू - तो ठीक है। हम तो...

बसंती - हाँ, हाँ, समझ गयी। तो यही पूछोगे न, कि "बसंती,

बेलापुर का दो और रामगढ़ का डेढ़ क्यों?" तो पूछो यह तांगा किस गाँव का है? पूछो, पूछो।

वीरू - किस गाँव का है जी?

बसंती - रामगढ़ का है।

वीरू - अच्छा, तो रामगढ़ का है।

बसंती - यूँ कि देखनेवाली बात यह भी है कि अगर हम बेलापुर की सवारी लें तो दो चक्कर हो जाते हैं। यहाँ से बेलापुर बेलापुर से रामगढ़। और अगर रामगढ़ गये तो समझो रामगढ़ गये। यूँकि तांगा भी रामगढ़ का है और हम भी रामगढ़ के हैं। यह तो हुई हमारी बात। अब यह बताओ कि तुम कहाँ जाओगे।

वीरू - यूँकि हम भी रामगढ़ ही जाएँगे।

बसंती - हाँ, हाँ तो चलो। मैंने कब मना किया। यूँकि वहाँ किस के घर जाना है, यह तो बताना ही पड़ेगा। कि बसंती उस घर को ले चलो। क्योंकि अगर हमको यह नहीं पता कि तुमको जाना कहाँ है, तो हम ताँगा रोकेंगे कहाँ?

वीरू - हम्म्म।

बसंती - और अगर हमने ताँगा नहीं रोका तो ताँगा रुकेगा कैसे? यूँकि देखनेवाली बात यह है कि ताँगा चला कौन रहा है? ताँगा हम चला रहे हैं। और अगर हम ही यह न जानें कि..

जय - ठाकुर बलदेव सिंह के घर जाना है।

बसंती - हाँ हाँ तो चलो, मैंने कब मना किया? तो फिर बोलो न ठाकुर साहब के घर जाना है। चल धन्नो। यूँकि यह तो वही मिसाल हो गयी है कि ... अह, ख़ैर छोड़ो। हमारे मौसाजी ही सारी ज़िंदगी ताँगा चलाते रहे। मगर देखनेवाली बात यह है ...(थोड़ी दूरी पर)... तो आप समझो यह कि माँ-बाप तो हमारे पहले ही से नहीं थे। और फिर मौसा के बाद मौसी और ताँगे की ज़िम्मेदारी किस पर आ गयी? हम पर आ गयी। लोग हमसे यह भी कहते हैं कि "बसंती! लड़की होकर ताँगा चलाती हो।" तो हम उस का जवाब यह देते हैं, कि धन्नो घोड़ी होकर ताँगा खींच सकती है, तो बसंती लड़की होकर ताँगा क्यों नहीं चला सकती है? बोलो।

वीरू - इस में क्या बात है? शहर में भी तो लड़कियाँ मोटरगाड़ियाँ चलाती हैं। उन्हें कोई कुछ नहीं कहता।

बसंती - हम्म्म, रहनेवाले शहर के हो लेकिन समझदार लगते हो। क्या नाम है?

वीरू - वीरू।

बसंती - तुमने यह नहीं पूछा कि हमारा नाम क्या है?

जय - तुम्हारा नाम क्या है, बसंती?

वीरू - चुप बे। जब देखो बकबक बकबक बकबक करता रहता है।

बसंती - यूँकि हमने आपसे तो बात नहीं की थी लेकिन अगर हमसे यह पूछ ही लिया, तो हम बताए देते हैं हमारा नाम बसंती है।

जय - पहली बार सुना यह नाम।

वीरू - बसंती! बड़ा प्यारा नाम है।
हमारा नाम बसंती क्यों रखा गया? इस के पीछे भी एक बात है।

वीरू - क्या बात है? बताओ। बताओ।

बसंती - वह यह कि जब मैं छोटी सी थी तो मौसी के देवर की सास ने कहा... अह...

वीरू - क्या कहा?

बसंती - कि नाम तो यूँ हरेक का रक्खा जाता है, मगर देखनेवाली बात यह है कि यह बसंती पैदा हुई बसंत में, इसलिये इसका नाम बसंती होना ही चाहिये। बस धन्नो, रुक जा सवार। (वे ठाकुर बलदेव सिंह के घर के सामने रुकते हैं।)
हाँ यह रही ठाकुर साहब की हवेली। यूँकि कमाल हो गया। तुम लोगों की बातों में रास्ते का पता ही नहीं चला।

जय - हाँ, हमें ज़रा बात करने की आदत ज़्यादा है।

वीरू - यह रहा तुम्हारा डेढ़ रुपया।

बसंती - यूँकि तुम आदमी अच्छे हो इसलिये तुमसे पैसा तो लेना नहीं चाहिये लेकिन अगर घोड़ा घास से दोस्ती कर ले तो खायेगा क्या? इसलिये हम यह डेढ़ रुपया ले लेते हैं।

जय - बहुत मेहरबानी आपकी।

बसंती - चल धन्नो पलट सवार!!

वीरू — हाय, क्या प्यारी बातें करती है।

जय — प्यारी नहीं, बहुत सारी बातें करती है। चल। जहाँ लड़की देखी लाइन लगाना चालू। चल, चल ना!

(रामलाल उनका स्वागत करने आते हुए दिखायी देता है।)

रामलाल - आइये। आइये।... आइये।

ठाकुर बाहर आता है।

वीरू - नमस्ते ठाकुर साहब।

ठाकुर बलदेव सिंह - यहाँ पहुँचने में तकलीफ़ तो नहीं हुई।

वीरू - अँ हँ, जी, कोई ख़ास नहीं।

ठाकुर बलदेव सिंह - आइये। ... (तीनों कमरे के अन्दर जाते हैं।) अगर एक ख़त डाल देते तो मेरा आदमी स्टेशन आ जाता। तुम्हारे रहने का बन्दोबस्त कर दिया है। किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो माँग लेना। रामलाल। (रामलाल एक तिजोरी खोल कर कुछ पैसे निकालता है और वीरू को दे देता है।) मेरा वादा था गाँव पहुँचते ही तुम्हें पाँच हज़ार मिल जाएँगे। काम अच्छी तरह याद है न? मुझे गब्बर चाहिये। ज़िंदा।

वीरू - जी हाँ, याद है। आपको गब्बर चाहिये, और ज़िंदा चाहिये। मिल जाएगा।

ठाकुर बलदेव सिंह - थके होगे। आराम करो। बाक़ी बातें बाद में करेंगे।

रामलाल - आइए।

जय और वीरू रामलाल के साथ बाहर निकलते हैं।

उतरना = to descend (vi)

दिखायी देना = to be visible (vi)

तांगा = one-horse cart (m)

चलानेवाला = the one who drives (adj)

बुलाना = to call (vt)

पहले = previously (adv)

गाँव ठहरा है = after all, it's a village

चल देना = to set off (vi)

बेफ़ुज़ूल बात = unnecessary talk (f)

आदत = habit (f)

ज़बरदस्ती = force (f)

सौदा = transaction (m)

ज़मीनदार = landower (m)

बेगारी = bonded labour (f)

थोड़ी (थोड़े ही) = not at all (adv)

मर्ज़ी = pleasure, desire, will (f)

मिसाल = example (f)

मना करना = to forbid (vt)
झिगझिग करना = to argue (vt)
यूँ कि = in this way (adv)
सवारी = passenger (m)
चक्कर = circle (m)
रोकना = to stop (vt)
रुकना = to stop (vi)
चला कौन रहा है = कौन चला रहा है
धन्नो = horse's name
ख़ैर = well, anyway (adv)
छोड़ना = to leave (vt)
मौसा = uncle (m)
मौसी = aunty (f)
ज़िम्मेदारी = responsibility (f)
घोड़ी = mare (f)
खींचना = to pull (vt)
समझदार = intelligent, sensible (adj)
बकबक करना = to talk nonsense (vt)
प्यारा = lovely (adj)
देवर = husband's younger brother (m)
सास = mother-in-law (f)
पैदा होना = to be born (vi)
बसंत = spring (f)
हवेली = mansion (f)
कमाल = miracle (m)
पता चलना = to realise (vi)
घोड़ा घास से दोस्ती करना = for the horse to make friends with grass
मेहरबानी = favour, grace (f)
पलटना = to turn (vi)
स्वागत करना = to welcome (vt)
तकलीफ़ = difficulty, bother (f)
ख़त = letter (m)
डालना = to put, place (vt)
बंदोबस्त = arrangement (m)
माँगना = to demand (vt)